वर्ष 19 अंक 10
27 अक्टूबर 2021
एम.पी.एच.आई.एन. 2003 12367
पोस्ट दिनांक 30 अक्टूबर 2021

पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/32/2021-23
पृष्ठ संख्या 20
एक प्रति 20.00 रु.

ओ३म्

संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है ..

वैदिक रवि

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रमुख पत्र

महर्षि दयानन्द आर्ष कन्या गुरुकुल

ग्राम मोहन बड़ोदिया, जिला शाजापुर (म.प्र.)

गुरुकुल विशेषांक

एक दृष्टि में आर्य समाज

- आर्य समाज की मान्यता का आधार सत्य सनातन वैदिक धर्म है।
- सनातन वह है जो सदा से था, सदा रहेगा। सत्य सनातन धर्म का आधार वेद है।
- वेद ज्ञान का मूल परमात्मा है।
- यही सृष्टि के प्रारंभ का सबसे पहला ज्ञान, पहली संस्कृति और समस्त सत्य विद्याओं से पूर्ण है।
- वेद ज्ञान किसी जाति, वर्ण, सम्प्रदाय या किसी महापुरुष के ज्ञान के अनुसार नहीं है और न ही किसी समय व स्थान की सीमा में बन्धा है।
- परमात्मा की कल्याणी वाणी वेद समस्त प्राणियों के लिए और सदा के लिए हैं।
- इसे पढ़ना-पढ़ाना श्रेष्ठ (आर्य) जनों का परम धर्म है।
- ईश्वर को सभी मानते हैं इसलिए विश्व शान्ति इसी ईश्वरीय ज्ञान वेद से संभव है।
- आर्य समाज-अविद्या, कुरीतियों, पाखण्ड व जाति प्रथा जैसी सामाजिक बुराईयों को दूर करने वाला तथा सत्य ज्ञान व सनातन संस्कृति का प्रचारक है।

।। ओ३म्।।

वैदिक रवि मासिक

वर्ष 19 अंक–08

27 अक्टूबर 2021

(सार्वदेशिक धर्मार्थ सभा के निर्णयानुसार)

सृष्टि सम्वत् 1,96,08,53,119

विक्रम संवत् 2077

दयानन्दाब्द 194

सलाहकार मण्डल

राजेन्द्र व्यास

पं. रामलाल शास्त्री 'विद्याभास्कर'

डॉ. रामलाल प्रजापति

वरिष्ठ पत्रकार

प्रधान सम्पादक

श्री इन्द्रप्रकाश गाँधी

कार्यालय फोन : 0755-4220549

सम्पादक

प्रकाश आर्य

फोन : 07324-226566

सह सम्पादक

श्रीमती डॉ. राकेश शर्मा

सदस्यता

एक प्रति ..... 20,00 ₹

वार्षिक ..... 200,00 ₹

आजीवन ..... 1000,00 ₹

विज्ञापन की दरें

आवरण पृष्ठ 2 एवं 3 ..... 500 ₹

पूर्ण पृष्ठ (अन्दर) ..... 400 ₹

आधा पृष्ठ (अन्दर का) ..... 250 ₹

चौथाई पृष्ठ ..... 150 ₹

वैदिक रवि मासिक

गुरुकुल विशेषांक

अनुक्रमणिका

- सम्पादकीय : प्रदर्शन से लुप्त होता दर्शन 04
- प्रेरणा का स्त्रोत – दीपावली पर्व 06
- कविता – दीप 08
- महर्षि दयानंद आर्ष कन्या गुरुकुल 09
- शुभकामना संदेश 10
- गुरुकुल छायाचित्र 11
- समाचार 14
- सत्यार्थ प्रकाश न्यास बना दर्शनीय स्थल 16
- विनम्र अपील .. 18

सम्पादकीय :

प्रदर्शन से लुप्त होता दर्शन

प्रदर्शन किसी भी वस्तु, व्यक्ति, विचार का बाहरी स्वरूप है और दर्शन आन्तरिक। प्रदर्शन दृश्यमान है, दर्शन अदृश्य है। किसी भी वस्तु विचार, व्यक्ति, स्थान की ऊपरी पहचान प्रदर्शन से अवश्य होती है किन्तु मात्र प्रदर्शन से उसकी पूर्णता नहीं होती है उस प्रदर्शन के पीछे छिपा दर्शन ही उसका मूल होता है। जैसे नारियल, बादाम, अखरोट का दर्शनीय रूप और है लेकिन वास्तव में उपयोगिता उसके अन्दर छिपे पदार्थ से है।

समाज आज इस मूल्यवान विचार से भटक गया है और इसीलिए उसका परिणाम जो वह सोचता है, जैसा वह चाहता है वैसा प्राप्त न होते हुए विपरीत ही रहता है। जब मनुष्य दर्शन से दूर रहता है तो वह प्रदर्शन सीमित रह जाता है यथार्त से दूर हो जाता है। प्रायः आज हमने एक धार्मिक व्यक्ति की पहचान उसके ज्ञान, बुद्धि, संयम, तपस्या और दिनचर्या से, उसके आचार–विचार, व्यवहार से जो उसकी कसौटी उसका महत्व हैं उनसे नहीं करते अपितु यह न देखते हुए मात्र उसके वस्त्र, कंठी माला तिलक दाड़ी और बेशकीमती विलासिता से युक्त जीवन बड़े आश्रमों से ही उसे धार्मिक मान लिया है। मनुष्य बाहरी स्वरूप के प्रति दिल से प्रभावित होता है दिमाग से नहीं। किसी को स्वीकार करने, उसे अपनाने या उसे मान्यता देने के पहले यदि दिल और दिमाग दोनों का उपयोग किया जाए तो व्यक्ति प्रदर्शन तक ही नहीं वह दर्शन तक पहुंच जाता है।

सोने चांदी का व्यापारी दुकान पर बैठकर जब सोना खरीदता है तो उसके हाथ में आये हुए गहने के बाहरी रूप को देखकर वह प्रभावित नहीं होता है। बाहरी रूप से तो उसे सोने की चमक से भी ज्यादा प्रभावित कोई अन्य धातु कर सकती है। किन्तु ये बाहरी रूप उस धातु का प्रदर्शन है, भीतरी स्वरूप उसका गुण स्वर्ण है। इसलिए सोना खरीदने के पहले वह एक पत्थर जैसी धातु से जो कसौटी है उस पर घिसकर, परीक्षण कर उसके मूल रूप तक पहुंचता है, तब वह सही वस्तु को प्राप्त करता है।

किन्तु आज समाज प्रदर्शन में ही उलझकर रह गया है। प्रदर्शन में उलझा हुआ समाज, दर्शन से दूर रहकर वास्तविक लाभ से वंचित रह रहा है और भ्रम में जी रहा है। बाहरी प्रदर्शन से ही देश, धर्म और समाज की सेवा का नाटक करने वाले अनेक बहरूपिए करोड़ों–करोड़ों जनता को गुमराह कर ठग रहे हैं। इसी कारण अनेक गलत विचारधारा और उपरी स्वांग से सजे व्यक्तियों को मान्यता प्राप्त हो रही है। इसलिए कहा गया, पहले जानो फिर मानों।

परन्तु जमाना आज बिना सोचे समझे दूसरों की मान्यता को आधार बनाकर पहले मानता है, फिर जानने का प्रयास करता है। आचार्य चाणक्य ने भी मात्र प्रदर्शन को देखकर उसे आत्मसात करना गलत बताया और कहा मानव के पास परमात्मा ने जो बुद्धि दी है जिसका उपयोग करके वह सत्य असत्य को तर्क पर जो सही उतरे उसे मानना चाहिए – **"यस्तर्केण अनुसंधन्ते स धर्मो वेद नेतरः"**

आज समाज में बढ़ती हुई अव्यवस्था का कारण यही है कि हम जो मानते हैं वह वैसा नहीं है और कुछ बातों को ऐसा नहीं मान रहे, जैसी माननी चाहिए।

रावण के चारित्रिक पतन के कारण उसे नीचा दिखाने के लिए उसका सामुहिक रूप से पुतला दहन किया गया। इस दहन के पीछे भावना थी जिसका अपयश है, जिसकी अकीर्ति होती है, वह समाज में मरे हुए के समान होता है **"अकीर्ति सा मृत्यु"**

इसलिए लाखों साल के बाद भी उसके पुतले को बुराई का प्रतीक मानकर दहन किया जाना है इस दहन के पीछे समाज को सन्देश देने का प्रतीक था। किन्तु समाज आज जो बुराई का प्रतीक था उसका पुतला बड़े से बड़ा बनाते है और मनोरंजन का एक और माध्यम उसे बना चुके हैं। इसलिए अतीत में जो दर्शन रावण दहन के पीछे था एक बुराई का अन्त करने का था, वह अब प्रदर्शन बनकर रह गया। सीता हरण भी रावण के द्वारा साधू का ऊपरी प्रदर्शन करके ही तो हुआ था? बाहरी रूप से ही तो धोखा हुआ था किन्तु हमने उससे कुछ नहीं सीखा। वही परिपाटी आज भी चल रही है। अनेक साधू, सन्त, विद्वान, नेता का बाहरी रूप धारण किए हुए व्यक्ति अनेक प्रकार के घृणित कार्यों में उलझे हैं लेकिन भ्रमित समाज उन्हें अपना आराध्य मानकर पूज रहा है।

आप सबके सामने ताजा उदाहरण है – आपने देखा है मात्र प्रदर्शन से प्रभावित करके अनेक अपने आपको सन्त बताने वालों ने करोड़ो व्यक्तियों को अपना निशाना बनाया। जब उनके पाप का पर्दाफाश हुआ तब तक कई उनके शिकार बन चुके थे। जिन्हें करोड़ो व्यक्ति भगवान मान रहे थे – उनका स्थान आज कारागृह बन गया। यह सब इसीलिए हुआ कि हमने ऐसे व्यक्तियों के बाहरी स्वांग व प्रभावित करने वाली वाणी और नोटंकी को ही श्रेष्ठ मान लिया उनके वास्तविक स्वरूप पर चिन्तन नहीं किया।

इसी प्रकार हमारे पर्वो में भी यह पाया जाता हैं। हमारे देश में दीपावली का त्यौहार प्राचीन पर्व है। कृषि प्रधान देश में नए अन्न की फसल आने पर खुशियॉ मनाकर उस प्रभु का धन्यवाद करने के लिए यज्ञ किया जाता था। अब केवल दीपमाला, फटाखे, मकान की सजावट तक ही इस विचार को समझ रहे हैं तथा कहीं–कहीं जुआं खेलना प्रचलन में आ गया है और दर्शन से दूर हैं। इसलिए किसी भी स्थान, व्यक्ति, विचार और वस्तु के प्रदर्शन पर ही आकर्षित होना बुद्धिमानी नहीं है, प्रदर्शन के पीछे की भावना दर्शन मुख्य है। यदि ऐसा किया जाए तो शोषण, परेशानियों व संकटों से बचा जा सकता है।

प्रेरणा का स्त्रोत

दीपावली पर्व

– डॉ. सोमदेव शास्त्री, मुम्बई

हमारा देश पर्वों का देश है वर्ष में किसी न किसी रूप में हम इन्हें मनाते रहते हैं। मुख्य रूप से यह त्यौहार मनाने का कारण महापुरूषों से संबंधित किसी घटना के कारण, ऋतु परिवर्तन के समय पर अथवा राष्ट्रीय, सामाजिक, धार्मिक धारणाओं के कारण या नई फसलों के आने पर मनाए जाते हैं।

पर्व मनाने का जब तक उस पर्व का हमारा मनाना मात्र ऊपरी दिखावा ही होगा। सही कारण ना जानने से कहीं–कहीं उसमें विकृति आ रही है हम शुभ अवसर पर अशुभ या अनुचित कृत्य करने लगे हैं। जैसे होली पर शराब, भांग का सेवन, रंग के स्थान पर कीचड़, डामर, रंग, पेन्ट आदि क्षति कारक पदार्थों का प्रयोग। इसी प्रकार दीपावली पर जुआ खेलने का प्रचलन।

वर्ष में बारह पूर्णिमा और बारह अमावस्यो होती है। अश्विनी पूर्णिमा (शरद पूर्णिमा) को चन्द्रमा का सबसे अधिक प्रकाश होता है तथा कार्तिक अमावस्या (दीपावली को सबसे अधिक घना अन्धकार होता है) घने अन्धकार को दूर करने का प्रयत्न मनुष्य दीपमाला (दीप पंक्ति) के द्वारा करता है क्योंकि परमेश्वर के बनाये हुए दीपक सूर्य–चन्द्रमा के सामने मनुष्य की दीपक जैसी स्थिति है।

वर्षा ऋतु के बाद जब नया अनाज कृषक के घर आता है तो वह अनाज की प्राप्ति के साधन बैल, गाय, मजदूरादि का सम्मान और पूजादि करता है। इसी प्रकार व्यापारी व्यापार में जिन कर्मचारियों के माध्यम से धन कमाता है उनका सम्मान भी इस

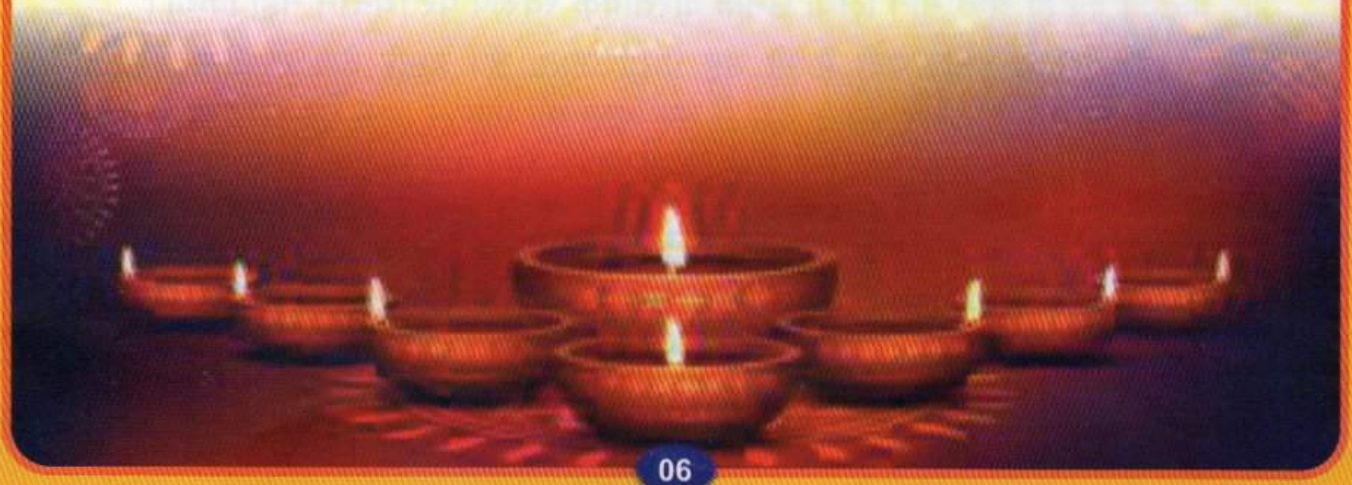

दिन करता है जिससे वे पूरी मेहनत और निष्ठा से व्यापार कार्य में लगे रहे। धन की प्राप्ति के साधन मशीन इत्यादि की देखभाल, मरम्मत, रंग रोगनादि इस पर्व पर कराया जाता है। जिससे पूरे वर्ष तक मशीन ठीक तरह से चलती रहती है। उसी का विकृत रूप मशीनों की पूजा करना, अगबत्ती जलाना, उन पर तिलक करना, नारियल फोड़ना इत्यादि प्रचलित हो गया है। धन जिन साधनों से प्राप्त होता है। उनका तो सम्मान किया ही जाता है। किन्तु जिस परमात्मा की महती कृपा से मनुष्य अन्न और धन प्राप्त करने के योग्य बना है। उसको भी धन्यवाद देना उसके प्रति कृतज्ञता प्रकट करना मनुष्य का कर्तव्य है। इसी दृष्टि से परमात्मा की पूजा, लक्ष्मी के रूप में प्रचलित हो गई है। परमात्मा का एक नाम लक्ष्मी भी है। उसकी उपासना करना, उसके प्रति आभार प्रकट करना, उसको धन्यवाद देने का परिवर्तित रूप आज लक्ष्मी पूजा प्रचलित हो गया है। परमात्मा के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के लिये घर–घर में इसके विशेष यज्ञ किये जाते हैं। इसका परिवर्तित रूप यह हो गया है कि जब तक भगवान को न खिलाये, भोग न लगेगा। तब तक हमें नया अन्न नहीं खाना चाहिए। इसलिये नयी मक्का जब आती है। तब किसान सबसे पहले पांच मुट्ठी मन्दिर में भगवान के भोग के लिये ले जाता है और उसके बाद दूसरे दिन खाना प्रारंभ करता है। दीपावली को अनाज के नये दाने देवी देवताओं के सामने अग्नि जलाकर घी के साथ उन्हें इस विश्वास के साथ डालता है कि जिस भगवान की कृपा से हमें अन्न प्राप्त हुआ है, उसे भोग लगाकर खयेगें। इस तरह यज्ञ करके नया अन्न खाना शुरू करता है। इस प्रकार परमेश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के लिये जीवन में अन्धकार को दूर करके प्रकाश फैलाने के लिये दीपावली का पर्व मनाया जाता है।

आर्यों के लिये इस पर्व का महत्व और भी अधिक है क्योंकि इसी दिन सारे संसार में अविद्यारूपी अन्धकार को दूर करके मानव जीवन में प्रकाश फैलाते हुए युग निर्माता महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने नश्वर शरीर का परित्याग किया। ईश्वर और धर्म के नाम पर छाये हुए अविद्या रूपी बादलों को दूर करके वेद विद्या और ज्ञान का प्रकाश फैलाया और इस कार्य के लिये अपना बलिदान भी कर दिया। यह पर्व हमें प्रेरणा दे रहा है कि अज्ञान, पाखण्ड अन्य विश्वास को दूर करके हम वेदों का प्रकाश फैलाने का अथक प्रयास करें। जिससे मनुष्यों का जीवन सुखदायी और वैभवशाली हो। पर्व हमें प्रेरणा, सन्देश (संबल) मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। इसलिये उसे समझकर मनाना ही वास्तविक रूप से पर्वों को मनाना हैं।

दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएँ

दीप

नन्हें दीपक ने ज्यों,
अन्धकार को ललकारा है।
बढ़ती दानवता ने आज,
मानवता को नकारा है।।

निराशा संस्कृति नहीं हमारी,
विश्वास ही इतिहास हमारा है।
ऐ सोने वालों जागो,
आने वाला कल तुम्हारा है।।

"सर्वे भवन्तु सुखिनः" को,
जीवन सन्देश बना डालो।
जितने बुझे पड़े हैं दीप,
उठकर सारे जला डालो।।

– प्रकाश आर्य, महू

दीपावली के ज्योति पर्व पर परमात्मा आप सबके हृदय ज्ञान प्रकाश से आलौकित कर दे, सुख समृद्धि स्वास्थ प्रदान करें, ऐसी प्रार्थना है। दीपोत्सव मंगलमय हो।

विनीत :

इन्द्रप्रकाश गांधी
सभाप्रधान

प्रकाश आर्य
सभामन्त्री

एवं समस्त कार्यकारिणी सदस्य एवं पदाधिकारीगण
मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा, भोपाल

महर्षि दयानंद आर्ष कन्या गुरुकुल, मोहन बड़ोदिया
तीसरा स्थापना दिवस सम्पन्न

महर्षि दयानंद आर्ष कन्या गुरुकुल मोहन बडोदिया का तृतीय स्थापना दिवस दिनांक 23 से 25 अक्टूबर 2021 तक गुरुकुल परिसर में मनाया गया। इस अवसर पर स्थानीय क्षेत्र निवासी और पालकगण सेकड़ो की संरव्या में उपस्थित हुए इसके अतिरिक्त दिल्ली, गुना, भोपाल, उज्जैन, नान्द्रा, धार, महू, इन्दौर, होशगाबाद, आदि स्थानों से भी गुरुकुल के सहयोगी आर्यजन उपस्थित हुए। कार्यक्रम की सफलता हेतु मुख्य रुप से आचार्या नंदिता जी शास्त्री चतुर्वेदा एवं पाणिनी कन्या महाविद्यालय वाराणसी उनके साथ गुरुकुल की कन्याऐं, आचार्य हरिशंकर जी अग्निहोत्री (आगरा), श्री भानुप्रकाश जी भनोपदेशक (बरेली) को आमंत्रित किया था। कार्यक्रम में आमंत्रित मध्यप्रदेश सरकार की मंत्री सुश्री उषा जी ठाकुर ने अपना प्रतिनिधि भेजकर शुभकामनाएं प्रदान की साथ ही 5 लाख का चेक शासन की ओर से भेजा एवं विधायक श्री विपिन जी वानखेड़े भी उपस्थित हुए और उन्होंने आगर क्षेत्र की पांच आर्य समाजों को एक –एक लाख देने का और गुरूकुल को निरन्तर सहयोग करते रहने की घोषणा की।

32 छात्राओं को यज्ञोपवीत

गुरूकुल में आचार्या नंदिता जी शास्त्री के ब्रहमत्व में 32 छात्राओं को यज्ञोपवित उपनयन संस्कार के द्वारा प्रदान किया गया। बालिकाओं के अभिभावक उपस्थित होकर इस मनोरम दृश्य को देखकर भावुक हो रहे थे। इस वर्ष गुरूकुल की कन्याओं प्रवेश संख्या 51 हुई और लगभग 12 कन्याओं को प्रवेश हेतु रहवास स्थानाभव के कारण प्रतिक्षा सूची में रखा गया है। इसी गुरूकुल से 51 की संख्या के अतिरिक्त 8 बालिकाओं को शास्त्री और आचार्य की योग्यता हेतु पाणिनी कन्या महाविद्यालय वाराणसी में आगामी अध्ययन हेतु भेजा गया।

क्षेत्र में छात्रावास प्रारंभ होने से शाजापुर, आगर, उज्जैन जिले में और प्रदेश में गुरूकुल के कारण एक नव चेतना का संचार हुआ। गुरूकुल के प्रति लोगों में आकर्षण बढ़ा है इसी का परिणाम है कि इस वर्ष 8 बालक गुरूकुल होशंगाबाद में और 8 बालिकाओं ने वाराणसी में अध्यन हेतु प्रवेश लिया हैं। गुरूकुल की इन्ही बालिकाओं के माध्यम से आसपास के क्षेत्र में प्रचार कार्य भी निरन्तर किया जा रहा हैं।

गुरूकुल में अध्ययनरत बालिकाओं की संख्या में तेजी से वृद्धि होती जा रही हैं। इस कार्यक्रम में बालिकाओं द्वारा संस्कृत नाटिका, संस्कृत गीत, व्यायाम प्रदर्शन संस्कृत, हिन्दी, इग्लिश, में मंत्रों के भावार्थ की प्रस्तुती की गई जो विशेष आकर्षण रहा। जितने भी श्रौता कार्यक्रम स्थल पर उपस्थित रहे वे बालको के कार्यक्रम को देख कर अभिभुत हो रहे थे। उपस्थित श्रोताओं में से अनेक पालको ने अपनी पुत्रीयों को गुरूकुल में प्रवेश कराने की इच्छा प्रकट की। गुरूकुल के लिए उपस्थित आर्यजनों ने मुक्तहस्त से दान दिया। मंच से गुरूकुल की आचार्या सुश्री प्रज्ञा विद्यालंकार ने कहा गुरूकुल ने सीमित समय आपका यदि आर्शीवाद मिलता रहे तो हम यहां और अधिक प्रगति का विश्वास दिलाते है। हमारा उद्धेश्य बालिकाओं को मात्र पंडित बनाना नहीं है, बल्कि उन्हें शिक्षा में पारंगत बनाकर सर्वागीण विकास करना और एक श्रेष्ठ नागरिक बनाकर देश को सौपना हैं।

सुरेशचन्द्र आर्य

प्रधान

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली

शुभकामना संदेश

यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है कि महर्षि दयानन्द आर्ष कन्या गुरुकुल, मोहन बड़ोदिया की स्थापना को तीन वर्ष पूर्ण होने जा रहे हैं। इस अल्पकाल में इस गुरुकुल में जो बहुमुखी उन्नति देखने को मिली है वह निश्चित रुप से अत्यन्त प्रशंसनीय और अभिनन्दनीय है। केवल 13 बालिकाओं से प्रारम्भ हुए इस कन्या गुरुकुल में वर्तमान में 51 बालिकाऐं अध्ययनरत हैं और अनेक बालिकाऐं प्रतीक्षा सूची में हैं। इतने कम समय में इतनी अधिक ख्याति अर्जित कर लेना इस बात का स्पष्ट संकेत है कि इस गुरुकुल में दी जा रही शिक्षा, रहने की व्यवस्था, भोजन आदि की व्यवस्था अत्यन्त उत्तम श्रेणी की है। कन्याओं की सुरक्षा भी काफी सुदृढ़ है और गुरुकुल का वातावरण भी अत्यन्त शांत एवं रमणीय है। सबसे अधिक प्रसन्नता और गौरव प्रदान करने वाली बात यह है कि इसी गुरुकुल में 8 बालिकाऐं शास्त्री और आचार्य आदि बनने के लिए पाणिनि कन्या महाविद्यालय, वाराणसी में प्रवेश प्राप्त कर चुकी हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि ये सभी बालिकाऐं आचार्य नन्दिताजी शास्त्री के मार्गदर्शन में उच्चकोटि की विदुषी बनकर वैदिक संस्कृति के प्रचार-प्रसार में अपना अमूल्य योगदान दे सकेंगी।

यह सर्वविदित है कि प्रत्येक सफलता के पीछे किसी न किसी व्यक्ति विशेष का हाथ छुपा होता है। मैं इस गुरुकुल की अद्वितीय सफलता के लिये श्री प्रकाश जी आर्य और उनकी पूरी टीम को हार्दिक बधाई देता हूँ। इस गुरुकुल को प्रारम्भ करना उनके लिये सपने जैसा था परन्तु उन्होंने अपने दृढ़ संकल्प के आधार पर इसे साकार करके दिखा दिया। मैं मोहन बड़ोदिया क्षेत्र के सभी ग्रामीणवासियों तथा प्रमुख महानुभावों का भी हृदय से आभारी हूँ जिनका वर्ष पर्यन्त सभी प्रकार का सहयोग गुरुकुल को प्राप्त होता रहता है।

कन्याओं की निरन्तर बढ़ती हुई संख्या को देखते हुए इस गुरुकुल में आवासीय तथा शिक्षण व्यवस्थाओं का विस्तार भी आवश्यक प्रतीत हो रहा है जिसके लिये पर्याप्त धन की आवश्यकता होगी। जिस प्रकार अभी तक सबका सहयोग प्राप्त होता रहा है उसी प्रकार भविष्य में भी प्राप्त होता रहेगा, ऐसा मेरा दृढ़ विश्वास है।

अन्त में, मैं महर्षि दयानन्द आर्ष कन्या गुरुकुल, मोहन बड़ोदिया की सभी कन्याओं के मंगलमय भविष्य की कामना कनरता हूँ। सभी शिक्षिकाओं तथा आचार्याजी को अपनी शुभकामनाऐं अर्पित करता हूँ। आने वाले वर्षों में इस गुरुकुल का नाम एक उदाहरण के रुप में लिया जायेगा, ऐसी पूर्ण आशा और विश्वास है।

तृतीय वार्षिकोत्सव अत्यन्त सफलता के साथ सम्पन्न हो, ऐसी परमात्मा से प्रार्थना है।

भवदीय

सुरेशचन्द्र

(सुरेशचन्द्र आर्य)

ध्वजारोहण दृश्य

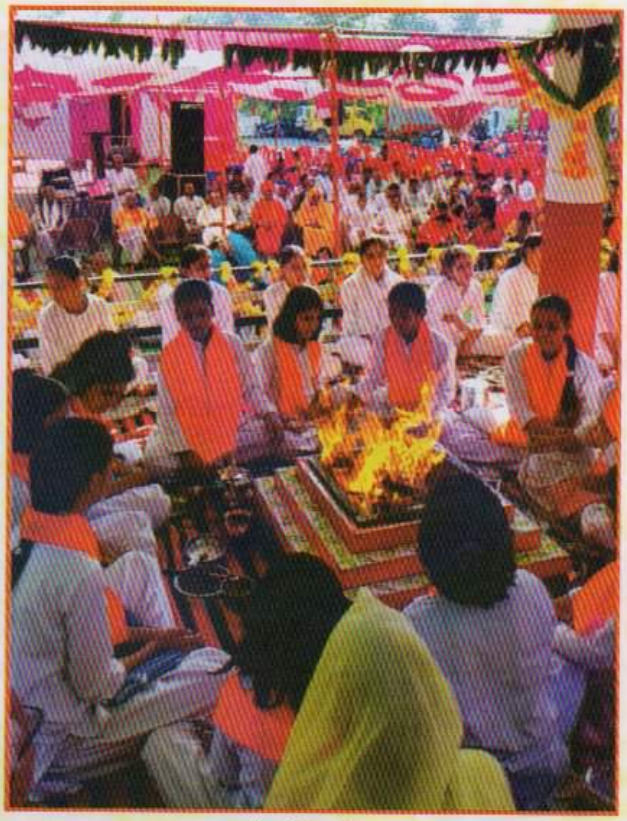

यज्ञोपवीत संस्कार

श्रोतागण

श्रोतागण

सभाप्रधान - इन्द्रप्रकाश जी गांधी

आचार्य नंदिता जी शास्त्री चतुर्वेदा

विधायक – विपिन वानखेड़े

भानुप्रकाश जी शास्त्री भजन प्रस्तुति

देशभक्ति कार्यक्रम प्रस्तुत करती कन्याएं

कन्याओं का मार्चफास्ट

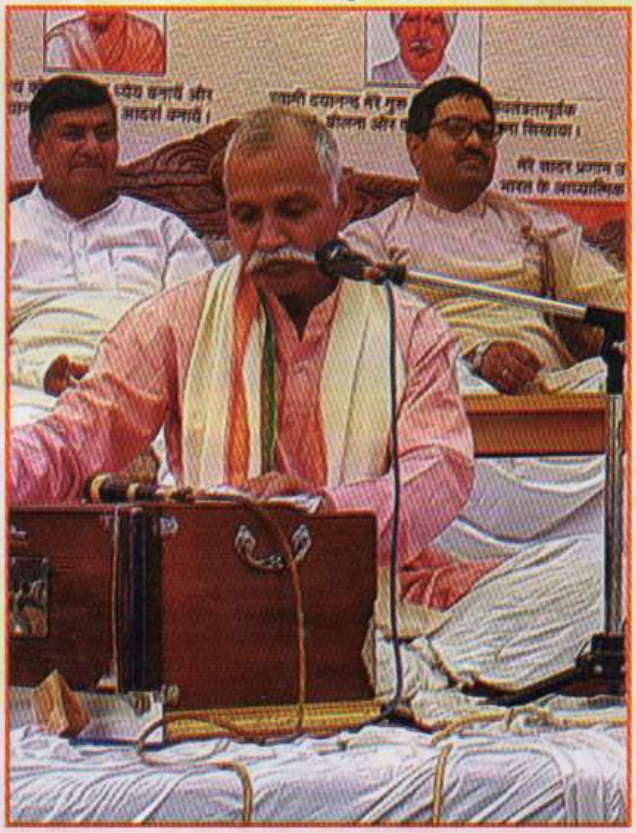

पंडित काशीराम जी अनल द्वारा प्रस्तुति

राकेश सिंह ठाकुर जी का स्वागत करते हुए

संस्कृत मंत्रों का हिन्दी अंग्रेजी अनुवाद

गुरुकुल की कन्याओं द्वारा व्यायाम प्रदर्शन

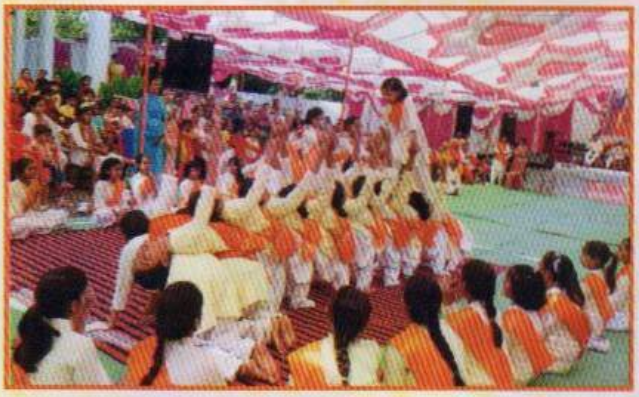

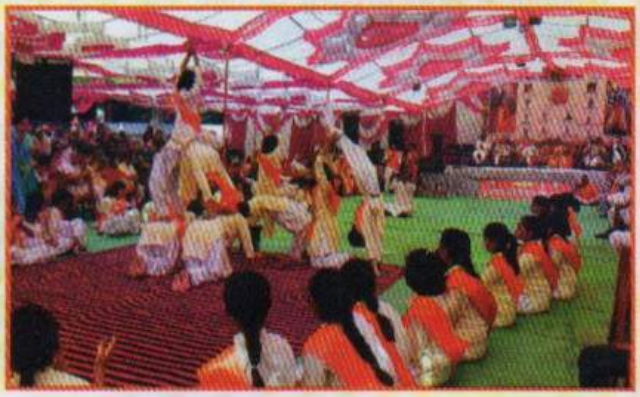

मंचस्थ अतिथिगण

श्रोतागण

आगामी विस्तार हेतु भूमि प्राप्ति का प्रयास और सहयोग

गुरूकुल समीति ने गुरूकुल से लगी हुई पास की भूमि भी क्रय करने का सौदा किया हैं। गुरूकुल में अभी बच्चियों के लिए एक हांल बनाने की अत्यन्त आवश्यकता हैं। गुरूकुल को अभी लगभग 35 लाख रूपये की आवश्यकता है। जिसमें म.प्र. शासन द्वारा 5 लाख रूपये सहयोग स्वरूप देने की घोषणा की है। इसके अतिरिक्त भी कई दानी महानुभाव बढ़–चढ़कर सहयोग दे रहे हैं। इसी क्रम में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र जी आर्य ने 2 लाख 51 हजार की सहायता भेजी। इस अवसर पर गुरुकुल हितचिन्तक दानी महानुभावों ने एक–एक कन्याओं की व्यवस्था हेतु सहयोग राशि 15500 / 16000 प्रतिवर्ष देने का वचन दिया। इनके नाम इस प्रकार है – श्री इन्द्रप्रकाश जी गांधी, श्री वेदप्रकाश जी शर्मा भोपाल, श्री अतुल जी वर्मा भोपाल, श्री दक्षदेव जी गौड़ आर्य समाज मल्हारगंज इन्दौर, श्री हेमराज जी मास्टरजी अवंतिपुर बड़ोदिया, श्री शंभुसिंह जी तंवर झाल्ड़ा ने एवं आर्य समाज विक्रम नगर, आर्य समाज धार।

महर्षि दयानन्द द्विजन्म शताब्दी समारोह एवं 150 वीं सत्यार्थ प्रकाश जयंति समारोह वर्ष 2023-24-25 मनाने का निर्णय

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि द्वारा महर्षि के 200 वें जन्म उत्सव और सत्यार्थ प्रकाश की 150 वीं जयंति मनाने का निर्णय लिया गया। इस संदर्भ में सत्यार्थ प्रकाशन्यास उदयपुर में सार्वदेशिक सभा प्रधान श्री सुरेशचन्द्र जी आर्य के द्वारा समारोह की दृष्टि से एक बैठक आहुत की गई जो 14 एवं 15 नवम्बर को सम्पन्न हुई। दो दिवसीय बैठक में समारोह से संबंधित और आर्य समाज संगठन की प्रगति की दृष्टि से बिन्दुओं पर चर्चा की गई। अनेक सुझाव प्राप्त हुए यह समारोह देश विदेश के महत्वपूर्ण स्थानों पर 3 वर्षों में अलग अलग अवसरों पर मनाये जावेंगे।

बैठक में सार्वदेशिक सभा मैं स्वयं (प्रकाश आर्य), श्री विनय आर्य, श्री वाचोनिधी आर्य सत्यार्थ प्रकाश न्यास के श्री अशोक जी आर्य एवं अन्य सहयोगी इसके अतिरिक्त गुजरात, कर्नाटक, राजस्थान, दिल्ली, महाराष्ट्र के प्रमुख सक्रिय आर्यजन चर्चा में उपस्थित रहे। आगामी पूर्ण रुपरेखा सार्वदेशिक अंतरंग में निश्चित की जावेगी।

दर्शन योग धर्मार्थ ट्रस्ट रोजड द्वारा म.प्र. के तीर्थ स्थान ओंकारेश्वर में ध्यान, अध्यात्म के लिए आश्रम स्थापना

दर्शन योग धर्मार्थ ट्रस्ट रोजड़ के अन्तर्गत आचार्य ईश्वरानंद जी के माध्यम से स्थानीय आर्यजनों एवं सभा के सहयोग से म.प्र. के तीर्थ स्थल ओंकारेश्वर के पास एक ध्यान केन्द्र खोला जा रहा हैं। इस आश्रम के माध्यम से योग, ध्यान, एवं वैदिक सिद्धांतों से अपरिचित सज्जनों के लिए विशेष कार्यक्रम आदि किये जावेगे। इस आश्रम में दर्शन योग महाविद्यालय, वैदिक गौशाला आदि कई सनातन संस्कृति को लेकर योजनाएं चलाई जावेगीं। इस गुरूकुल में युवाओं को मनोनियंत्रण, ब्रह्मचर्य, ध्यान, योग, यज्ञ, आत्मा परमात्मा संबंधित, विद्या।

इसका पहला शिविरार्थियों का दिनांक 11 से 15 नवम्बर तक आयोजित किया गया था। जिसमें दिल्ली, पंजाब, गुजरात, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश आदि स्थानों से शिविरार्थी उपस्थित हुए। इस अवसर पर मैं प्रकाश आर्य भी उपस्थित हुआ तथा पूर्ण सहयोग सभा की ओर आर्य समाजों की ओर से देने की घोषणा की।

आगामी शिविर 100 शिविरार्थियों का पुनः दिसम्बर 2021 में लगाने की तिथी निश्चित की गई इतनी संख्या में आने की स्वीकृति भी मिल चुकी है। संयोजक रघुराम आर्य और महेश आर्य निवासी सनावद को पूर्णरूप से आचार्य जी के सहयोगी बनकर कार्य को गति दे रहे हैं।

सत्यार्थ प्रकाश न्यास बना दर्शनीय स्थल

वैसे तो सत्यार्थप्रकाश की दृष्टि से उदयपुर स्थित राजा सजनसिंह का नवलखा महल आर्यो की दृष्टि से एक ऐतिहासिक स्थल हैं। महर्षि दयानंद ने इसी स्थान पर संशोधित सत्यार्थ प्रकाश को पूर्णता प्रदान की थी।

समय के साथ साथ स्थान का महत्व गुलाब बाग के साथ जुड़ने से प्रसिद्ध हुआ। हजारों की संख्या में नगर व प्रवासी नागरिक इसका आनन्द लेने सैर करने हेतु आते जाते रहे।

राजा के जाने के पश्चात नवलखा महल का रख रखाव वैसा नहीं हो रहा था जैसा पहले होता था। धीरे धीरे उसकी सुन्दरता में गिरावट आने लगी यह भी सत्य है कि यदि उसे समय रहते संभाला नहीं जाता तो वह आज खंडहर के रूप में परिवर्तित हो जाता।

किन्तु आर्यो के प्रयास से शासन द्वारा यह स्थान हमें प्राप्त हुआ स्वामी तत्वबोध जी ने इसके कायाकल्प की कल्पना की और उसे सत्यार्थ प्रकाश न्यास के रूप में स्थापित कर दिया।

श्री अशोक जी आर्य उनके दाहिने हाथ के समान सहयोगी बने और आज उस पूर्ण भार को संभाल रहे हैं। शनैः शनैः इसकी सौन्दर्यता और महत्व बढ़ता गया आज उसकी गणना उदयपुर के दर्शनीय स्थलों में होने लगी हैं, वहां जो कुछ अभी तक हो चुका वह भी आर्य जगत के लिए आश्चर्य और गौरव स्थल बन गया हैं।

विशेष कर 16 संस्कारों को एक कक्ष में विभिन्न प्रान्तों की पहचान के साथ चित्र, व प्रतिमा और उससे संबधित लेख के साथ दर्शाया गया हैं। यह महर्षि की संस्कार विधी के आधार पर है। जन सामान्य को समझाने के लिए अत्यन्त प्रभावशाली व उत्तम विधी हैं।

इसी स्थल पर एक विशाल कक्ष जिस 30 फुट की ऊंचाई पर डोम बना है सूर्य के प्रकाश में रंग बिरंगे रंगों में बना यह डोम अत्यन्त आकर्षक व दर्शनीय हैं। एक अत्यन्त आकर्षक ज्ञानवर्धक और सनातन संस्कृति तथा राष्ट्र की, देश के महापुरूषों की महर्षि के जीवन से संबधी चित्र दीर्घा (गैलरी) बनाई हैं। इसमें श्रृष्टि के प्रारंभ में वैदिक ज्ञान की प्राप्ति किस प्रकार हुई उसे कियी प्रकार हम तक पहुंचाया वैदिक ऋषियों ने विज्ञान के क्षेत्र में चिकित्सा के क्षेत्र में और मानवीय आवश्यकताओं का अनुसंधान किस प्रकार किसके द्वारा हुआ यह सचित्र बताया गया हैं।

मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम जी, योगेश्वर श्री कृष्णचन्द्र जी के यर्थात जीवन दर्शन को दो अलग अलग स्थान पर दर्शाया गया। समाज राष्ट्र और सनातन धर्म आर्य समाज के लिए समर्पित आर्यजनों, विद्वानों, और बलिदानियो के चित्र और उनका संक्षिप्त जीवन परिचय उल्लेखित किया गया।

राजस्थान के प्रमुख राजाओं और घटनाओं को दर्शाया गया हैं। महर्षि के जीवन से बलिदान पर्यन्त महत्वपूर्ण धटनाओं को चित्र के माध्यम से दर्शाया हैं। इस दीर्घा को एक गाईड़ समझाकर दिखाता है बीच बीच में कोई प्रश्न यदि दर्शक पूछते है तो उनका युक्ति पूर्वक समाधान करते हैं।

यही पर एक थियेटर उसी प्रकार से जैसे सिनेमा हाल होता हैं बनाया गया है। उसी अंदाज से बैठक व्यवस्था कक्ष, परदा, (स्क्रीन) और साउन्ड सिस्टम, लगाया हैं। इसमे छोटी छोटी लघु फिल्मे आर्य समाज, वैदिक सिद्धान्तों और आर्य समाज के प्रमुख विद्धानों, नेताओं पर आधारित है दिखाई जाती हैं।

यह आर्य समाज के लिए एक गौरवपूर्ण उपलब्धी हैं। इसकी प्रसीद्धि फैल रही हैं। वर्ष में हजारों की संख्या में पर्यटक टिकिट लेकर इस स्थल को देखने आते है। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान श्री सुरेशचन्द्रजी आर्य एवं श्री दीनदयालजी गुप्ता (डॉलर बनियान) के विशेष सहयोग से अशोक जी आर्य एवं सहयोगी निरंतर अथक परिश्रम करते हुए इसे और उत्तम बनाने में लगे हैं बधाई के पात्र हैं। उदयपुर के दर्शनीय स्थलों में निश्चित ही यह एक महत्वपूर्ण स्थल बन गया है प्रत्येक आर्य को एक बार अवश्य देखना चाहिए।

विनम्र अपील

धर्म प्रेमी आत्माओं,

आप की कुशलता स्वस्थ और दीर्घायु जीवन हेतु प्रार्थना करते हैं। परमात्मा की महती कृपा और आर्य जनों के सहयोग से मध्य प्रदेश का प्रथम कन्या गुरूकुल 8 जुलाई 2019 को प्रारंभ हुआ। वर्ष 2019 में कन्याओं की संख्या 16 तक रही किन्तु विगत दो वर्षो में ही यह 59 हो गई। इनमें से 8 कन्याये पाणिनी कन्या महाविद्यालय बनारस आगामी अध्यन करने हेतु गई हैं।

सनातन धर्म की सुरक्षा, प्रगति, समुचित ज्ञान गुरूकुल के ही माध्यम से सभंव हैं। जब तक गुरूकुल परम्परा से पठन पाठन होता था तब तक मानव समाज व्यवस्थित, अनुशासित, और धार्मिक भावनाओं से पूर्ण था। इस कारण व्यक्ति से लेकर विश्व तक सभी सुख शान्ति का अनुभव करते थे। कालान्तर में शिक्षा पद्धति में परिवर्तन होता गया। शिक्षा मानव की समुचित परेशानियों और दुःखों से दूर करने का माध्यम था। किन्तु बदलते परिवेश में अब वह नहीं रहा शिक्षा मात्र व्यक्तिगत छवि अथवा धन उपार्जन तक सीमित हो गई।

आज बड़ी संख्या में व्यापारी, डॉक्टर, इन्जीनियर, वकील, आदि तो बन रहे हैं किन्तु विश्व की आत्मा विश्व का श्रृंगार, शोभा मानवता है आज एक श्रेष्ठ मानव का निर्माण नहीं हो रहा हैं। नई पीढ़ी सनातन संस्कृति से दूर अन्यत्र विचार धाराओं में भटक रही हैं। इसमें दोष, उन ना समझ युवक युवतियों को नहीं हमारी शिक्षा पद्धति जो संस्कार व नैतिकता विहिन हैं उसका हैं। पाश्चात्य सभ्यता की चकाचौंध में युवक युवतिया भटक कर पतन की राह पर चल पड़े हैं।

इन सबका समाधान है गुरूकुलीय शिक्षा जिसमें मानव का सर्वागीण विकास होने के साथ ही एक संस्कारित, नैतिक प्रधान मानव का निर्माण होता हैं। इसी भावना से कन्या गुरूकुल की स्थापना मोहन बड़ोदिया में की गई हैं। वर्तमान स्थिति से आभास हो रहा है आगामी कुछ वर्षो में ही इसमें पढ़ने वाली छात्राओं की एक बड़ी संख्या होगी। मध्य प्रदेश शिक्षा मण्डल से मान्यता प्राप्त विद्यालयीन शिक्षा की भी पढ़ाई हो रही हैं।

इस दृष्टि से गुरूकुल परिसर का विस्तार करना आवश्यक हुआ हैं। गुरूकुल के पास ही सीमा से लगी ढाई बीघा भूमि खरीदने का सौदा किया है। बालिकाओं के निवास हेतु स्थान कम पड़ रहा है आगामी कुछ बालिकाओं को स्थानावाभ के कारण प्रवेश नहीं दिया गया हैं। इसलिए द्वितीय मंजिल पर दो बड़े कक्ष 2 आचार्याओं के निवास हेतु बनाना हैं। एक बड़ा हॉल जिस हेतु मध्य प्रदेश शासन से 5 लाख रूपया प्रदान करने की घोषणा की है वह भी बनना है जिसकी लंबाई 75x35 फुट हैं।

वानप्रस्थ आश्रम

इसी परिसर के पास वानप्रस्थ आश्रम भी बनाने की योजना हैं हमारे जीवन दानी आर्यों के लिए सन्यासी, वानप्रस्थिजनों के व्यवस्था हेतु तथा आध्यात्म व शांति के इच्छुक दम्पत्तियों के लिए यह व्यवस्था करने का निर्णय लिया है। इन सब कार्यो के लिए लगभग 75 लाख रूपयों की आवश्यकता हैं। कुछ सनातन धर्मी दान दानदाताओं ने सहयोग का आश्वासन भी दिया हैं। आर्य जनों के सहयोग से और परमात्मा की कृपा से यह पूर्ण होगा इसमें संदेह नहीं हैं।

इसी भावना से आपकी ओर यह निवेदन भेजा जा रहा हैं। कृपया इस महत्वपूर्ण सनातन धर्म रक्षक कार्य हेतु अपनी ओर से, परिवार की ओर से पूर्वजों की स्मृति में कक्ष बनाकर अथवा उसमें सहयोग राशि देकर सहयोग करें। आर्य समाज की ओर से भी सात्विक दान प्रदान कर अनुग्रहीत करें।

आप अपना सहयोग सीधे बैंक में चैक द्वारा अथवा नगद गुरूकुल पते पर भेज सकते हैं।

महर्षि दयानन्द आर्ष कन्या गुरूकुल समिति

बैंक ऑफ इण्डिया, शाखा कानड़, जिला आगर

खाता क्र. 956320110000171

आई.एफ.एस.सी.कोड़ BKID0009563

सम्पर्क – 9826655117, 6261186451

मानव कल्याणार्थ

※ आर्य समाज के दस नियम ※

1. सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सब का आदि मूल परमेश्वर है।
2. ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरुप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।
3. वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।
4. सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।
5. सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए।
6. संसार का उपकार करना आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।
7. सब से प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार यथायोग्य बर्तना चाहिए।
8. अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।
9. प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में संतुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति समझनी चाहिए।
10. सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

एम.पी.एच.आई.एन. 2003 12367

पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/32/2021-23

अवितरित रहने पर कृपया निम्न पते पर लौटायें
मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा
तात्या टोपे नगर, भोपाल-462003(म.प्र.)

मुद्रक, प्रकाशक, इन्द्र प्रकाश गांधी द्वारा चतुर्वेदी प्रिन्टर्स, इन्दौर से मुद्रित कराकर
मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय, तात्या टोपे नगर, भोपाल से प्रकाशित। संपादक - **प्रकाश आर्य, महू**

AMIT CHATURVEDI # 98262-71062